अगर मिटाना है खुले में शौच! तो बदलनी होगी लोगों की सोच!

पर्चे पर लिखी बातों को लोगों को लैट्रीन का इस्तेमाल करने के लिए कहते समय और स्वच्छता अभियान पर काम करने वाले लोगों के बीच होने वाली बातचीत में इस्तेमाल किया जा सकता है| जैसे:

- विज्ञापन एजेंसियों को जब स्वच्छ भारत अभियान के विज्ञापन बनाने के लिए संपर्क किया जाए|
- जब प्रधान, अपने गाँव के लोगों से बात करते हैं
- स्वच्छता दूत की ट्रेनिंग में
- आशा, आंगनवाडी और ए.एन.एम्. की ट्रेनिंग में
- जब राज्य, जिले, ब्लॉक या पंचायती राज के अधिकारी लोगों से या अन्य सरकारी लोगों से स्वच्छता के बारे में बात करें|

पाँच लोगों का परिवार अगर इसमें रोज़ टट्टी करेगा, तब भी पाँच साल तक इसका गढ्ढा नहीं भरेगा!!

लोगों को लगता है कि सरकारी लैट्रीन "नकली", "टेम्परेरी" या "इमरजेंसी" के लिए है, और कुछ ही महीनों में भर जाएगी|

लेकिन...सरकार जो लैट्रीन के गढ्ढे बनाती है- दो गढ्ढे जिनकी चौडाई और गहराई 3 फिट होती है– वो असल में 6 लोगों के परिवार के लिए 5 साल तक चलती हैं|

गाँव में रहने वाले बहुत से लोगों को सही से नहीं मालूम होता है कि लैट्रीन का गढ्ढा भरने में कितना समय लगेगा, लोग समझते हैं कि सरकारी लैट्रीन कुछ ही महीनों में भर जाती है| इसके साथ ही गाँवों में लैट्रीन के गढ्ढे को साफ़ करवाने की सुविधा भी नहीं होती है जिसकी वजह से लोग घर में लैट्रीन होने के बाद भी खुले में टट्टी करने के लिए जाते हैं| सरकारी लैट्रीन के छोटे गढ्ढे के साथ ये समस्या और ज्यादा बड़ी दिखती है|

- सोखते गढ्ढे वाली लैट्रीन में जालीदार दीवार होती है, जिससे गढ्ढे में जाने वाला पानी ज़मीन में सूख जाता है|
- लोगों की टट्टी का ज़्यादातर हिस्सा पानी होता है, जिसे ज़मीन सोख लेती है और इसलिए गढ्ढे को भरने में काफी समय लगता है|
- सरकारी दो गढ्ढे वाली लैट्रीन असल में 6 लोगों के परिवार के लिए 5 साल तक चलती है|

सरकारी लैट्रीन का गढ्ढा खुद साफ़ करना है आसान! उससे निकली सुखी खाद बढाए फसलों में जान !!

लोगों को लगता है कि सरकारी लैट्रीन का गढ्ढा साफ़ करना, हाथ से मैला उठाने जैसा है|

लेकिन...दो गढ्ढे होने की वजह से मैले को खाद बनने के लिए समय मिल जाता है और उसे हाथ से निकाला जा सकता है| खाद मिट्टी की तरह होती है, और उसे साफ़ करने में मैला उठाने जैसा कुछ भी गलत नहीं है|

गावों में रहने वाले ज़्यादातर लोग लैट्रीन का गढ्ढा या मैला खुद साफ़ नहीं करना चाहते हैं| उन्हें लगता है कि उसे साफ़ करने का काम एक विशेष जाती का है| वो सोचते हैं कि अगर वो लोग लैट्रीन का गढ्ढा खुद साफ़ करेंगे तो गाँव के दूसरे लोग उनसे घृणा करेंगे| इस वजह से गाँव में अगर किसी की लैट्रीन का गढ्ढा भर जाता है तो उसे साफ़ करने के लिए वो किसी को बुलाते है| यह समस्या सरकारी लैट्रीन के लिए, जो उन्हें लगता है छोटे गढ्ढे वाली है और कुछ ही महीनो में भर जाएगी, और भी बड़ी दिखती है|

- सरकारी लैट्रीन में दो गढ्ढे होने की वजह से उसे खाली करने में कोई दिक्कत नहीं होती है| जब पहला गढ्ढा भर जाता है तो लोग गढ्ढे में जाने वाले पाईप पर एक ढक्कन लगाकर उसे बंद कर सकते हैं और दूसरे गढ्ढे में जाने वाले पाईप का ढक्कन खोल सकते हैं|

- सरकार के दिशानिर्देश कहते हैं कि अगर गढ्ढे को 2 साल के लिए इस्तेमाल न किया जाए तो उसका पानी ज़मीन में सूख जाता है और मैला सूख कर खाद बन जाता है|
- इस सूखी खाद में न ही बदबू आती है, न ही उसमें लोगों को बीमार करने वाले कीटाणु होते हैं और साथ ही वो न ही अपवित्र होती है और न ही उसे साफ़ करना मैला उठाने जैसा है| गढ्ढे से निकली खाद का खेतों में भी इस्तेमाल किया जा सकता है|
- एक गढ्ढा भरने में 2.5 साल का समय लगता है, और भरे हुए गढ्ढे में मैले को खाद बनाने में 2 साल का| इसका मतलब है कि भरे हुए गढ्ढे में मैले को खाद बनने के लिए, दूसरा गढ्ढा भरने तक पर्याप्त समय होता है|

सैर के नाम पर खुले में टट्टी जो तुम जाओगे !
याद रखना, लौटते वक्त बीमारियाँ साथ लाओगे !!

लोगों को लगता है कि खुले में टट्टी के लिए जाना स्वास्थ्य के लिए अच्छा होता है|

लेकिन...खुले में टट्टी करना असल में स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं होता है|

बहुत से लोगों को लगता है कि सुबह जल्दी उठना और बाहर खुले में टट्टी के लिए जाना स्वास्थ्य के लिए अच्छा होता है| लोग कहते हैं कि ऐसा करने से उन्हें खुली हवा मिल जाती है और शरीर में खून की दौडान भी ठीक रहती है|

- लोगों के खुले में टट्टी करने से उसमें मौजूद कीटाणु दूसरे लोगों को बीमार करते है| भारत में हर साल लाखों बच्चे इन कीटाणुओं की वजह से मर जाते हैं|
- बच्चे दूसरों के खुले में टट्टी करने से आस पास फैले केटाणुओं से बीमार हो जाते है| इससे उनकी लम्बाई और समझदारी उतनी नहीं होती जितनी कि होनी चाहिए| इस कमी की वजह से वो बच्चे बड़े होकर उतने पैसे भी नहीं कमा पाते जितना कि वो तब कमाते, जब उनके आस पास के लोग लैट्रीन का इस्तेमाल करते|
- सुबह जल्दी उठना और घूमने जाना स्वास्थ्य के लिए अच्छा होता है पर खुले में टट्टी करने जाना नहीं| बेहतर होगा कि लोग लैट्रीन का इस्तेमाल करने के बाद या उसके पहले खुली हवा में सैर करें|
- एक गाँव में अगर कुछ परिवार लैट्रीन का इस्तेमाल करते हैं और कुछ परिवार खुले में टट्टी करने के लिय जाते हैं तो ऐसे में लैट्रीन इस्तेमाल करने वाले लोग भी दूसरे खुले में जाने वाले लोगों की वजह से बीमार होते हैं| इसलिए बेहतर यही है कि खुद तो लैट्रीन का इस्तेमाल करें ही और साथ ही दूसरों को भी उसे इस्तेमाल करने को कहें|

नर, नारी हो या हो जवान,
शौंचालय की ज़रुरत है सबको सामान!

लोगों को लगता है कि लैट्रीन कमज़ोर लोग इस्तेमाल करते हैं: महिलाएं, बच्चे, बूढ़े और बीमार

लेकिन...लैट्रीन का इस्तेमाल करना सभी के लिए ज़रूरी है|

बहुत से लोगों को लगता है कि जो लोग टट्टी के लिए मैदान तक जा सकते हैं, शरीर से मज़बूत है, को लैट्रीन इस्तेमाल करने के बजाए खुले में ही टट्टी के लिए जाना चाहिए| लैट्रीन का इस्तेमाल लोग तभी करते हैं जब उन्हें बहार जाने में कोई दिक्कत होती है| इसके साथ ही गाँवों में दीवार पर लिखे बहुत से सन्देश महिलाओं की इज्ज़त और पर्दे को लेकर लैट्रीन की ज़रुरत के बारे में बात करते हैं| पर अगर सरकार सिर्फ ये कहेगी कि लैट्रीन महिलाओं के लिए ज़रूरी है, तो वो गलती से आदमियों को यह सन्देश दे रही है कि उन्हें लैट्रीन इस्तेमाल करने की कोई ज़रुरत नहीं है|

- यह ज़रूरी है कि मर्दों को भी लैट्रीन इस्तेमाल करने के लिए समझाया और मनाया जाए| बेहतर होगा कि सभी लोग लैट्रीन का इस्तेमाल करें क्योंकि सभी लोगों की टट्टी में कीटाणु होते हैं जिससे दूसरे और खुद के परिवार के लोग बीमार होते हैं|

rice
research institute
for compassionate
economics

riceinstitute.org
contact@riceinstitute.org
facebook.com/riceinstitute
@riceinstitute